# बाबा साहेब अंबेडकर और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

**- लोकेन्द्र सिंह**

***सारांश :***

*महान समाज सुधारक एवं देशभक्त डॉ. भीमराव अंबेडकर और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों में कुछ हद तक साम्य है। विशेषकर, हिन्दू समाज में संगठन की आवश्यकता एवं हिन्दू समाज से अस्पृश्यता को दूर करने के लिए जिस प्रकार का संकल्प बाबा साहेब के विचारों में दिखायी देता है, उसके दर्शन संघ के कार्य में प्रत्यक्ष रूप से होते हैं। बाबा साहेब और संघ का निकट का संपर्क भी रहा है। डॉ. अंबेडकर ने संघ की शाखा एवं शिक्षा वर्गों में जाकर स्वयंसेवकों को संबोधित भी किया है और संघ के पदाधिकारियों से संघ कार्य की जानकारी भी प्राप्त की थी। संघ के प्रति बाबा साहेब के मन में कभी कोई दुराग्रह या नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं रहा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के कार्यकर्ताओं एवं अधिकारियों के मन में भी बाबा साहेब के प्रति श्रद्धा का भाव रहा है। संघ उन्हें महान समाज सुधारक एवं देशभक्त के रूप में स्मरण करता है।*

***बीज शब्द :*** *बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, आरएसएस, अस्पृश्यता*

बाबा साहेब लिखते हैं- “हिन्दू संगठन राष्ट्रीय कार्य है। यह स्वराज से भी अधिक महत्व का है। स्वराज का कोई मतलब नहीं रह जाएगा, अगर आप इसकी रक्षा न कर पाए। स्वराज से ज्यादा महत्वपूर्ण प्रश्न स्वराज के अंतर्गत हिन्दुओं को बचाना है”।[1] स्मरण रखें कि भारत के स्वराज को बचाए रखने, भारत को पुन: पराभव से बचाए रखने के लिए हिन्दू संगठन की आवश्यकता का यह विचार बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने धर्मान्तरण की घोषणा के बाद व्यक्त किए। भारत के भविष्य

[1]बाबासाहेब, डॉ. आंबेडकर, संपूर्ण वाङ्मय, खंड-1, पृ-105-106

को लेकर हिन्दू समाज के संगठन की आवश्यकता को जब बाबा साहेब अपने लेखन में रेखांकित कर रहे थे, ठीक उसी समय नागपुर के ही महापुरुष डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार हिन्दुओं के ऐसे ही संगठन 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' को स्थापित करने के लिए अपना जीवन होम कर रहे थे। अपनी 100 वर्ष की यात्रा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की संकल्पना के अनुरूप न केवल स्वराज्य की रक्षा की है अपितु राष्ट्रीय एकता-अखंडता के लिए अतुलनीय योगदान भी दिया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के आपसी संबंधों को लेकर अकसर चर्चा होती है। एक वर्ग इसे सिरे के नकारता है जबकि एक वर्ग उत्सुकता से संघ और बाबा साहेब के विचारों के अंतर्संबंधों को समझने का प्रयास करता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को लेकर बाबा साहेब के मन में एक सकारात्मक छवि थी, जिसका दर्शन उन्होंने संघ के निकट आकर भी किया।

बाबा साहेब का सान्निध्य प्राप्त करने वाले संघ के प्रचारक एवं चिंतक दत्तोपंत ठेंगडी ने अपनी पुस्तक 'डॉ. अम्बेडकर और सामाजिक क्रांति की यात्रा' में लिखा है कि- "बाबा साहेब को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बारे में पूरी जानकारी थी। सन् 1935 में पुणे में लगे महाराष्ट्र के पहले संघ शिक्षा वर्ग को देखने के लिए वे गए थे। उस समय उनकी भेंट पूजनीय डॉ. हेडगेवार से भी हुई थी। वे अपने व्यवसाय के निमित्त दापोली गए थे, तब वहाँ की संघ शाखा पर गए और खुलेमन से स्वयंसेवकों से चर्चा की"।[2] इसके साथ ही बाबा साहब डॉ. अंबेडकर से जुड़े रहे पूर्व लोकसभा सांसद बालासाहेब सालुंके ने भी बाबा साहब डॉ. अंबेडकर और संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार की मुलाकात का उल्लेख किया है।[3] उनके पुत्र काश्यप सालुंके ने भानुदास गायकवाड़ के साथ मिलकर बालासाहेब सालुंके के संस्मरणों एवं विचारों का संकलन किया है- 'आमचं सायेब : दिवंगत खासदार बालासाहेब सालुंके'। इस पुस्तक के पृष्ठ 25 और 53 पर डॉ. अंबेडकर और आएसएस के संदर्भ में उपरोक्त उल्लेख आते हैं। याद रहे कि बाला साहेब सालुंके और उनके पुत्र काश्यप सालुंके का संघ से कोई संबंध नहीं है। पुस्तक में बाला साहेब सालुंके के हवाले से लिखा गया है- "पुणे में भाऊसाहेब गडकरी के बंगले पर डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार की मुलाकात हुई। फिर भाऊसाहेब अभ्यंकर, श्री बाळासाहेब साळुंके के साथ बाबा साहब डॉ. अंबेडकर को भावे स्कूल में लगे स्वयंसेवकों के ग्रीष्मकालीन शिविर में भेंट के लिए ले गए। बाबा साहब ने यहाँ सैन्य अनुशासन और संगठन पर भाषण दिया"। पुणे के एक कार्यक्रम में जब सालुंके मुख्य अतिथि के नाते शामिल हुए तब उन्होंने इस भेंटवार्ता का सार्वजनिक उल्लेख किया- "भाइयों और बहनों, सबसे पहले मैं संघ पुणे प्रबंधन को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने

[2] डॉ. अम्बेडकर और सामाजिक क्रांति की यात्रा, दत्तोपंत ठेंगडी, पृ-153

[3] आमचं सायेब : दिवंगत खासदार बालासाहेब सालुंके, काश्यप सालुंके एवं भानुदास गायकवाड़, पृ-25 एवं 53

मुझे आज अतिथि के रूप में आमंत्रित किया और इस यात्रा को सफल बनाया। आज उस अवसर को याद करना भी उचित होगा जब मैंने इस कार्य (संघकार्य) को रुचि के साथ देखना शुरू किया था। 12 मई 1939 को, जब मैं वकील भाऊसाहेब गडकरी के प्रभातगढ़ निवास पर था; तब मैंने दो महापुरुषों, पूज्य डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर, जिन्होंने भारतीय दलितों के लिए समान अधिकार सुनिश्चित करने के लिए अथक प्रयास किए, और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक पूज्य डॉ. हेडगेवार की मुलाकात देखी। फिर अधिवक्ता भाऊसाहेब अभ्यंकर हम सभी को भावे स्कूल में आयोजित स्वयंसेवकों के ग्रीष्मकालीन शिविर में लेकर गए"।

संघ की शाखा एवं संघ शिक्षा वर्ग में बाबा साहब के आने और भाषण देने का उल्लेख दत्तोपंत ठेंगडी ने अपनी एक अन्य पुस्तक 'एकात्मता के पुजारी- डॉ. बाबा साहब अंबेडकर' में किया है कि सन् 1937 में करहाड शाखा (महाराष्ट्र) के विजयादशमी उत्सव पर भी बाबा साहब का भाषण हुआ और सन् 1939 में एक बार फिर बाबा साहब पुणे के संघ शिक्षा वर्ग के सायंकाल के कार्यक्रम में आए थे।[4] सन् 1940 में बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर पुणे में संघ की शाखा में भी गए थे। यहाँ स्वयंसेवकों के समक्ष अपने विचार प्रकट किए। विश्व संवाद केंद्र, विदर्भ ने 9 जनवरी 1940 को प्रकाशित प्रसिद्ध मराठी दैनिक समाचारपत्र 'केसरी' की प्रति साझा की है।[5] जिसके अनुसार, बाबा साहब डॉ. अंबेडकर 2 जनवरी, 1940 को सतारा जिले के करहाड गाँव स्थिति भवानी शाखा में गए। जहाँ स्वयंसेवकों से संवाद करते हुए उन्होंने कहा- "कुछ बातों पर मतभेद हो सकते हैं। लेकिन संघ की तरफ अपनत्व की भावना से देखता हूँ"। इस संबंध में उल्लेखनीय है कि इस ऐतिहासिक घटना की स्मृति में 2 जनवरी, 2025 को लोक कल्याण मंडल न्यास की ओर से श्री भवानी संघ स्थान पर बंधुता परिषद नाम से एक वैचारिक कार्यक्रम किया गया। इस आयोजन में अंबेडकरवादी संगठन के नेता शामिल हुए और अपने विचार भी प्रकट किए।

बाबा साहब डॉ. अंबेडकर और संघ का संपर्क निरंतर प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष से बना रहा। महात्मा गांधी की हत्या के पश्चात् सरकार ने द्वेषवश संघ पर प्रतिबन्ध लगाया था, उसे उठाने के लिए बाबासाहब, सरदार पटेल एवं श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने प्रयत्न किए थे। जुलाई 1948 में संघ पर लगा प्रतिबन्ध हटने के बाद उनके द्वारा किए गए प्रयासों के लिए उनका आभार मानने के निमित्त सितम्बर 1949 में श्री गुरुजी उनसे दिल्ली में मिले थे"।[6] उपरोक्त संदर्भ एवं प्रमाण सामने आने के बाद अब कोई इस बात से इनकार नहीं कर सकता है कि बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर कभी संघ के संपर्क में नहीं आए। उपरोक्त दस्तावेज बताते हैं कि बाबा साहेब स्वयं भी संघकार्य को

[4] एकात्मता के पुजारी- डॉ. बाबा साहब अंबेडकर, हो.वे. शेषाद्रि एवं दत्तोपंत ठेंगडी, पृष्ठ-15

[5] द प्रिंट, 2 जनवरी 2025, लिंक-
https://hindi.theprint.in/india/dr-ambedkar-joined-rss-branch-in-1940-vishwa-sanchar-kendra/770307/

[6] डॉ. अम्बेडकर और सामाजिक क्रांति की यात्रा, दत्तोपंत ठेंगडी, पृ-153

देखने-समझने के लिए संघ की शाखा में गए और समय-समय पर उन्होंने स्वयंसेवकों से संवाद भी किया।

संघ ने ढोल पीटे बिना ही सामाजिक समरसता के कार्य को अपने हाथ में लिया। प्रारंभ में संघ की ओर से कभी यह नहीं कहा गया कि हम अस्पृश्यता को दूर करके के लिए काम कर रहे हैं अपितु संघ ने इस दिशा में व्यवहारिक ढंग से अपने कदम बढ़ाए। अस्पृश्यता निवारण में संघ के योगदान को देखकर महात्मा गांधी और डॉ. अंबेडकर भी अभिभूत हो गए थे। दत्तोपंत ठेंगडी लिखते हैं कि सन् 1939 में पुणे में आयोजित संघ शिक्षा वर्ग में योजनानुसार शाम के कार्यक्रम में बाबासाहब आए। डॉ. हेडगेवार भी वहाँ थे। लगभग सवा पाँच सौ पूर्ण गणवेशधारी स्वयंसेवक संघस्थान पर थे। बाबासाहब ने डॉ. हेडगेवार से पूछा- 'इनमें अस्पृश्य कितने हैं?' डॉ. हेडगेवार ने कहा- 'चलो, घूम कर देखते हैं'। बाबासाहब बोले- 'इनमें अस्पृश्य तो कोई दिख नहीं रहा'। डॉ. हेडगेवार ने कहा- 'आप पूछ लें'। बाबासाहब ने पूछा- 'आप में से जो अस्पृश्य हों, वे एक कदम आगे आ जाएं'। उस पंक्ति में से एक भी स्वयंसेवक आगे नहीं आया। बाबासाहब ने कहा- 'देखा, मैं पहले ही कहता था'। इस पर डॉ. हेडगेवार ने कहा- 'हमारे यहाँ यह बताया ही नहीं जाता कि आप अस्पृश्य हैं। आप अपनी अभिप्रेत जाति का नाम लेकर उनसे पूछें'। तब बाबासाहब ने स्वयंसेवकों से प्रश्न किया- 'इस वर्ग में कोई हरिजन, मांग, चमार हो, तो एक कदम आगे आए'। ऐसा कहने पर कई स्वयंसेवकों ने कदम आगे बढ़ाया। उनकी संख्या सौ से ऊपर थी।

डॉ. हेडगेवार ने प्रचार के पीछे न पड़ते हुए, संगठन करने की अभिनव पद्धति को अपनाया था। उन्होंने जाति भेद रहित, वर्ण भेद रहित सामाजिक समतायुक्त समाज का एक छोटा प्रतिरूप निर्माण करके सबको दिखाया था। वे प्रतिज्ञापूर्वक कहते थे कि मानसशास्त्र के आधार पर, तब तक किसी के द्वारा न अपनाये हुए तन्त्र से सामाजिक समरसता निर्माण की जा सकती है एवं उस समरसता के फलस्वरूप सामाजिक समता निश्चितरूप से निर्माण की जा सकती है। डॉ. हेडगेवार की ही तरह बाबा साहेब की भी धारणा थी कि सामाजिक समरसता निर्माण हुए बिना, सामाजिक समता स्थापित नहीं हो सकेगी और हिन्दू संगठन का निर्माण भी नहीं हो सकता।

संघ में अस्पृश्यता अर्थात् जातिगत भेदभाव या छुआछूत के लिए कोई स्थान नहीं है। इसलिए संघ ने लगातार विकास किया है और आज वह हिन्दुओं का सबसे बड़ा संगठन बन गया है। संघ के तृतीय सरसंघचालक बाबासाहब देवरस ने तो यह कहा भी कि 'यदि अस्पृश्यता गलत नहीं है, तो संसार में कुछ भी गलत नहीं है'। संघ प्रारंभ से अस्पृश्यता का विरोधी रहा है, वह समता का पक्षधर रहा। हिन्दू समाज में आई इस विकृति को खत्म करने के लिए संघ ने धरातल पर काम किया है। संघ का ध्येय है- समतायुक्त एवं शोषणमुक्त हिन्दू समाज का निर्माण करना। विचार और व्यवहार की दृष्टि से देखें तो बाबा साहेब का उद्देश्य और संघ का उद्देश्य एक-समान है। बाबा

साहेब जिस प्रकार के हिन्दू संगठन की संकल्पना प्रस्तुत करते थे, वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उसी के अनुरूप है।

चूँकि बाबासाहब ने अपने लेखन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का बहुत उल्लेख नहीं किया है, इसलिए कुछ लोगों का यह दावा रहता है कि उन्हें संघ की या तो जानकारी नहीं थी या फिर वे उसके काम को महत्व नहीं देते थे। सबसे पहली बात तो यह कि संघ के काम में उन्हें अपने विचार के प्रतिकूल कुछ दिखा नहीं, सब अनुकूल ही दिखा, इसलिए उनके द्वारा संघ की आलोचना का प्रश्न ही नहीं उठता। जैसे हिन्दू महासभा के काम को लेकर उन्होंने एक-दो जगह अपनी असहमति जताई है, वैसी टिप्पणी उन्होंने संघ के विषय में नहीं थी। हालाँकि, हिन्दू महासभा के भी कुछ कार्यकर्ताओं का उनके मन में बहुत सम्मान था। बाबा साहेब को संघ की और उसके काम की पर्याप्त जानकारी थी। जब उन्होंने बौद्ध धर्म स्वीकारने के लिए दीक्षा समारोह के लिए नागपुर का चयन किया, तब अनेक संघ विरोधियों ने यह प्रचारित करने का प्रयत्न किया कि बाबा साहेब ने धर्मान्तर के लिए नागपुर का चयन इसलिए किया क्योंकि यह हिन्दुओं के सबसे प्रमुख संगठन आरएसएस का मुख्यालय है। इस झूठ को बाबा साहेब ने स्वयं ही ध्वस्त कर दिया था। दीक्षा भाषण में उन्होंने स्पष्ट किया कि "बहुत से लोग मुझसे यह प्रश्न पूछते हैं कि इस कार्य के लिए आपने नागपुर शहर क्यों तय किया? किसी और जगह यह कार्य क्यों नहीं किया? कुछ लोग यह कहते हैं कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की बड़ी पलटन नागपुर में होने के कारण उनके सीने पर चढऩे के लिए हमने इस शहर में यह सभा की है। यह जरा भी सच नहीं है। इस उद्देश्य से नागपुर में यह कार्य नहीं किया है। हमारा कार्य इतना बड़ा है कि उम्र का एक-एक मिनट भी कम पड़ता है। अपनी नाक खुजा कर दूसरे के लिए अपशकुन करने का मेरे पास समय नहीं है"।[7]

स्पष्ट है कि बाबा साहेब को संघकार्य की जानकारी भली प्रकार थी और उनका संघ से किसी प्रकार का विरोध नहीं था। बाबा साहेब संघ के कार्य के लिए किसी प्रकार के 'अपशकुन' की मंशा तक नहीं रखते थे। एक प्रकरण और है, जिससे पता चलता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसे हिन्दू संगठन के कामकाज की उनको जानकारी रहती थी। संघ के प्रचारक दत्तोपंत ठेंगडी की बाबा साहेब के साथ भेंट हुई, जिसका सविस्तार वर्णन करते हुए श्री ठेंगडी लिखते हैं- धर्मान्तरण करने के कुछ दिन पूर्व मैंने उनसे पूछा था- 'इतिहास काल में कुछ अत्याचार हुए हैं, यह ठीक है। हम कुछ तरुण लोग जो कुछ गुण-दोष होंगे, उनका प्रायश्चित करके समाज की रचना नये प्रकार से करने का प्रयत्न कर रहे हैं- यह आपकी जानकारी में है क्या? उन्होंने प्रत्युत्तर किया- 'क्या तुम्हारा आशय आरएसएस से है?' उन्हें मालूम था कि मैं संघ का प्रचारक हूँ। उन्होंने कहा- 'डू यू थिंक आई हैव

[7] बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर संपूर्ण वाङ्मय, खंड 40, पृ-450

नॉट गिवन थॉट टू दिस मैटर?' मैंने कहा- 'आपके विषय में हम यह कैसे कह सकते हैं? आपने सब बातों का विचार किया है'।

फिर उन्होंने मुझसे पूछा- 'संघ की स्थापना कब हुई? कितने वर्ष हो गए?' मैंने बताया- '1925 में संघ की स्थापना हुई। अब 27-28 वर्ष हो गए हैं'। उन्होंने कहा- 'मुझे मालूम है। लेकिन एक बात बताओ, तुम लोगों की संख्या कितनी है?' मैंने उत्तर दिया- 'मैं बता नहीं सकता'। वे बोले- 'प्रेस कॉन्फ्रेंस जैसे जवाब मत दो। निश्चित जवाब दो'। 'मुझे सचमुच मालूम नहीं है'- मैंने फिर से कहा। 'ऐसा मान लेते हें कि आप लोगों की संख्या 27-28 लाख होगी। इतने लोगों को एकत्र करने के लिए तुमको 27-28 वर्ष लगे। इस हिसाब से सारे समाज को एकत्र करने में कितने वर्ष लगेंगे? मैं कुछ बोलना चाहता था। तभी उन्होंने कहा- 'तुम कुछ कहो मत। मुझे मालूम है कि अंकगणितीय एवं रेखागणितीय विकास एक समान नहीं होता। लेकिन एक मेढक कितना भी फूले, तो भी बैल नहीं हो सकेगा। इसमें बहुत वर्ष लगेंगे। क्या तब तक परिस्थिति प्रतीक्षा करेगी? मैं क्या सचमुच बैठा रहूँगा। मेरे सामने सवाल यह है कि मरने के पूर्व समाज को कोई निश्चित दिशा देनी है, क्योंकि यह समाज अब तक दलित, पीड़ित, शोषित रहा है। उसमें जो नवजागृति आ रही है, उसमें एक चिढ़, आवेश होना स्वाभाविक है, और इस प्रकार का जो समाज होता है, वह कम्युनिज्म का भक्ष्य बन जाता है। मैं नहीं चाहता कि अनुसूचित जाति समाज कम्युनिज्म का आहार बने। इस कारण राष्ट्र की दृष्टि से यह जरूरी है कि उसे कोई न कोई दिशा देनी चाहिए। तुम संघवाले राष्ट्र की दृष्टि से प्रयत्न कर रहे हो, परन्तु एक बात ध्यान में रखो 'दलितों और कम्युनिज्म के बीच अम्बेडकर बाधा है तथा सवर्णों और कम्युनिज्म के बीच गोलवलकर बाधा है'। उन्होंने कहा- 'क्यों, ठीक है कि नहीं? इसलिए मरने के पूर्व यदि उन्हें दिशा न दे सका, तो कम्युनिज्म की ओर जानेवाला एक बड़ा वर्ग तैयार हो जाएगा। उन्हें फिर से अपने राष्ट्र प्रवाह में शामिल करना तुम लोगों को जमेगा नहीं, क्योंकि आप लोग जो कह रहे हैं, वह सही है या गलत, उचित है या अनुचित- यह प्रश्न ही नहीं है। तुम उच्चवर्णीय कह रहे हो, इसलिए मेरा समाज आपकी बात सुनेगा नहीं। इस कारण मरने के पूर्व मुझे यह व्यवस्था करनी है'।

संघ प्रचारक दत्तोपंत ठेंगडी के साथ बाबासाहेब के इस लंबे संवाद से स्पष्ट है कि वे राष्ट्रीय हित को देखकर बौद्ध धर्म का अनुसरण करने को प्रवृत्त हुए थे। कम्युनिज्म के विचार से अपने समाज को बचाने के लिए उसे एक दिशा दिखाने का कार्य बाबा साहेब ने किया। बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर के प्रति संघ में अत्यंत सम्मान है। यही कारण है कि 1990 में जब बाबा साहेब का जन्मशताब्दी वर्ष था, तब संघ की सर्वोच्च इकाई अखिल

भारतीय प्रतिनिधि सभा ने प्रस्ताव पारित करके स्वयंसेवकों के साथ ही संपूर्ण देशवासियों से आग्रह किया कि महान समाज सुधारक एवं देशभक्त डॉ. अंबेडकर का स्मरण करें, कार्यक्रमों

का आयोजन करके उनके विचारों को समाज के सामने लाएं और मन:पूर्वक अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें।[8] संघ ने अपने एकात्मता स्रोत (पूर्व में जिसे प्रात: स्मरण कहते थे) में भी बाबा साहेब को भी शामिल किया है। अर्थात् संघ के लिए बाबा साहेब प्रात: स्मरणीय और राष्ट्रीय एकात्मता को पुष्ट करनेवाले महापुरुष हैं। एकात्मता स्रोत का पाठ करते समय स्वयंसेवक बाबा साहेब के कृतित्व एवं व्यक्तित्व का स्मरण कर उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं।

*सहायक प्राध्यापक, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल

[8] अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा प्रस्ताव 1990 : डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर एवं महात्मा फुले, लिंक- https://www.archivesofrss.org//Encyc/2014/8/1/A.B.P.S.-1990---Dr.-Babasaheb-Ambedkar-and-Mahatma-Phuley.aspx